

बी.ए. (हिंदी) ऑनर्स कार्यक्रम  
(BAHDH)

सत्रीय कार्य  
(जनवरी 2022 और जुलाई 2022 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई.-143  
प्रेमचंद



मानविकी विद्यापीठ  
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय  
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110068

**प्रेमचंद**  
**सत्रीय कार्य**

**पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई.-143 / 2022**

आपको प्रेमचंद पर आधारित पाठ्यक्रम बी.एच.डी.ई.-143 का केवल एक सत्रीय कार्य करना है। इस सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह सत्रीय कार्य खंड 1 तथा 2 पर आधारित है।

**उद्देश्य :** शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ हमारा तात्पर्य पाठ्यक्रम सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आपको प्रेमचंद तथा उनके साहित्य से अवगत कराना है। प्रेमचंद ने कथा साहित्य के साथ-साथ निबंध, नाटक आदि की भी रचना की है। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने से आप प्रेमचंद के कथा साहित्य, नाटक एवं निबंध से परिचित हो सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम पर आधारित सत्रीय कार्य से आप यह जान सकेंगे कि आपको प्रेमचंद के साहित्य के संदर्भ में कितनी समझ और दक्षता प्राप्त हुई है। प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें।

**निर्देश :** सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

- 1). ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
- 2). अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
- 3). बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केंद्र का उल्लेख करें जैसे आगे दिखाया गया है।

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनांक : .....

**सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश**

1. सत्रीय कार्य पाठ्यक्रम के खंड 1 तथा 2 पर आधारित है। इसमें तीन भागों के अंतर्गत प्रश्न पूछे गए हैं, जिनका उद्देश्य प्रेमचंद और उनके साहित्य के गहन अध्ययन के संदर्भ में आपकी लेखन क्षमता की जाँच करना है।
2. इस सत्रीय कार्य में कुछ प्रश्न निबंधात्मक हैं। जिनके उत्तर पठित इकाइयों के आधार पर आपको निर्धारित शब्दों में देने हैं। कुछ प्रश्न टिप्पणीपरक हैं। एक प्रश्न पाठ्यक्रम में अध्ययन कराए जा रहे प्रेमचंद के साहित्य के अंश दिए गए हैं, जिनकी संदर्भ सहित व्याख्या करनी है। इस प्रकार इन प्रश्नों से जहाँ एक ओर आपकी प्रेमचंद के साहित्य संबंधी समझ विकसित होगी वहीं दूसरी ओर आप प्रेमचंद के उपन्यास, कहानी, नाटक तथा निबंध के अंशों की व्याख्या-विश्लेषण में भी समर्थ हो सकेंगे। उत्तर लिखते हुए भाषागत शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।
3. सत्रीय कार्य पूरा करके इसे जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास **अवश्य जमा करा दें।**

4. सत्रीय कार्य जमा करने की तिथि :

- दिसम्बर माह की सत्रांत परीक्षा के लिए – 31 अक्टूबर
- जून माह की सत्रांत परीक्षा के लिए– 30 अप्रैल

उत्तर देने के लिए निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आप के लिए लाभप्रद रहेगा।

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। विषय संबंधी प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले आपने उत्तर पर अच्छी तरह से विचार कर लीजिए। अगर आप बिना समझे पुस्तक या अन्य किसी स्रोत की सहायता से उत्तर देंगे तो इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा और सत्रांत परीक्षा में आप ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाएँगे। निबंधात्मक प्रश्न में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

- क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो।
- ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
- ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,
- घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
- ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

**प्रेमचंद**  
**(BHDE- 143)**  
**सत्रीय कार्य**

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई-143  
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.ई-143/टीएमए/2022  
कुल अंक 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

**भाग-क**

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

10×4 = 40

- (क). वह इन दिनों बहुत अध्ययनशील हो गया था। दालमंडी और चौक की सैर से वंचित होकर अब उसकी सजीवता इस नए मार्ग पर चल पड़ी। आर्य समाज के उत्सव में उसने कई व्याख्यान सुने थे, जिनमें चरित्र-गठन का महत्वपूर्ण वर्णन किया गया था। उनके सुनने से उसका भ्रम दूर हो गया था कि मुझे जो कुछ होना था, हो चुका। वहाँ उसे बताया गया था कि बहुत विद्वान होने से ही मनुष्य आत्मिक गौरव नहीं प्राप्त कर सकता। इसके लिए सच्चरित्र होना आवश्यक है। चरित्र के सामने विद्या का मूल्य बहुत कम है।
- (ख). मुझे यह कहने में हिचक नहीं कि मैं और चीजों की तरह कला को भी उपयोगिता की तुला पर तौलता हूँ। निस्संदेह कला का उद्देश्य सौन्दर्यवृत्ति की पुष्टि करना है और वह हमारे आध्यात्मिक आनन्द की कुंजी है, पर ऐसा कोई रुचिगत मानसिक तथा आध्यात्मिक आनन्द नहीं, जो अपनी उपयोगिता का पहलू न रखता हो। आनन्द स्वतः एक उपयोगिता-युक्त वस्तु है और उपयोगिता की दृष्टि से एक ही वस्तु से हमें सुख भी होता है और दुख भी। आसमान पर छायी लालिमा निस्सन्देह बड़ा सुन्दर दृश्य है, परन्तु आषाढ़ में अगर आकाश पर वैसी लालिमा छा जाय तो वह हमें प्रसन्नता देने वाली नहीं हो सकती।
- (ग). मीर साहब की बेगम किसी अज्ञात कारण से मीर साहब का घर से दूर रहना ही उपयुक्त समझती थीं इसलिए वह उनके शतरंज प्रेम की कभी आलोचना न करती थीं, बल्कि कभी-कभी मीर साहब को देर हो जाती, तो याद दिला देती थी। इन कारणों से मीर साहब को भ्रम हो गया था कि मेरी स्त्री अत्यंत विनयशील और गंभीर है, लेकिन जब दीवानखाने में बिसात बिछने लगी और मीर साहब दिन-भर घर में रहने लगे, तो बेगम साहिबा को बड़ा कष्ट होने लगा। उनकी स्वाधीनता में बाधा पड़ गई। दिन-भर दरवाजे पर झाँकने को तरस जातीं।
- (घ). मैं भी इनसे मिजाज दिखाऊँगा। खेलें खिलौने और खायें मिठाइयाँ। मैं नहीं खेलता खिलौने, किसी का मिजाज क्यों सँहूँ ? मैं गरीब सही, किसी से कुछ माँगने तो नहीं जाता। आखिर अब्बाजान कभी न कभी आयेंगे। अम्माँ भी आयेंगी ही। फिर इन लोगों से पूछूँगा, कितने खिलौने लगे ? एक-एक को टोक़रियों खिलौने दूँ और दिखा दूँ कि दोस्तों के साथ इस तरह का सलूक किया जाता है। यह नहीं कि एक पैसे की रेवड़ियाँ लीं, तो चिढ़ा-चिढ़ाकर खाने लगे। सबके सब खूब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है। हँसें! मेरी बला से। उसने दुकानदार से पूछा यह चिमटा कितने का है ?

**भाग-ख**

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 750-800 शब्दों में दीजिए।

15×3 = 45

- (1). प्रेमचंद के नाटकों का परिचय प्रस्तुत कीजिए।
- (2). 'कर्बला' नाटक के विचार पक्ष पर प्रकाश डालिए।
- (3). 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के संरचना-शिल्प का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

**भाग-ग**

3. निम्नलिखित विषयों पर (प्रत्येक) लगभग 350 शब्दों में टिप्पणी लिखिए :

5×3 = 15

- (1) पद्म सिंह का चरित्र
- (2) 'साहित्य का उद्देश्य' की शैलीगत विशेषताएँ
- (3) 'दो बैलों की कथा' का परिवेश